पात्रता

इस कार्यशाला में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी से जुड़े सभी वैज्ञानिक, शिक्षाविद, शोधकर्मी और मत्स्य कर्मी भाग ले सकते है ।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1. लेख भेजने की अंतिम तिथि – 15 फरवरी 2019
2. लेख स्वीकृति की अग्रिम सूचना – 1 मार्च 2019

महत्वपूर्ण सूचना :

इस कार्यशाला हेतु किसी भी प्रतिभागी को कोई भी पंजीकरण शुल्क अदा नहीं करना है और यह संस्थान या आयोजक मंडल प्रतिभागियो को किसी भी प्रकार के भत्ते को देने के लिए बाध्य नहीं है

हम आशा करते हैं कि इस कार्यशाला के प्रति आपका योगदान अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी के विकास और उससे जुड़े कृषको के जीविकोपार्जन को बढ़ाने में मदद करेगा और साथ ही साथ मात्स्यिकी और वैज्ञानिक समुदाय को अगले स्तर पर ले जाने के लिए पथप्रदर्शक की भूमिका अदा करेगा।

आयोजक मंडल

मुख्य संयोजकः डा. श्रीकांत सामंत, प्रधान वैज्ञानिक
सह–संयोजकः श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक; श्री संजीव कुमार साहु, वैज्ञानिक; डा. (श्रीमती) सुमन कुमारी, वैज्ञानिक; मो. कासिम, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी; सुश्री सुनीता प्रसाद, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी; एवं श्रीमती सुमेधा दास, तकनीकी सहायक (हिंदी अनुवादक)

पृष्ठभूमि और स्थान

ऐतिहासिक रूप से बैरकपुर शहर ब्रिटिश शासन के तहत एक सैन्य और प्रशासनिक केंद्र था, और 19 वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन के खिलाफ विद्रोह के कई कार्यों का गवाह बना है ।

भारत में सबसे पुरानी छावनी और पश्चिम बंगाल में पुलिस प्रशिक्षण अकादमी दोनों बैरकपुर में स्थित हैं। बैरकपुर ट्रंक रोड बैरकपुर को कोलकाता से जोड़ती है। घोषपारा रोड बैरकपुर को कांचरापाड़ा और नादिया के निकटवर्ती जिलो से जोड़ता है। बैरकपुर से कई बस मार्ग निकलते हैं जो कोलकाता से बैरकपुर को जोड़ते हैं। बैरकपुर, कोलकाता और इसके उपनगरों के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है। बैरकपुर चिरियामोर बैरकपुर ट्रंक रोड और सुरेंद्रनाथ बनर्जी रोड के पास है। बैरकपुर दम दम हवाई अड्डे के साथ अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। उपनगरीय ट्रेन द्वारा सियालदह स्टेशन से बैरकपुर स्टेशन तक या रोड द्वारा दमदम एअरपोर्ट से बैरकपुर पहुंचने में लगभग 35–40 मिनट लगते हैं। संस्थान में हावड़ा स्टेशन से शेवराफुली घाट तथा फिर दौपैसा घाट द्वारा भी पहुंचा जा सकता है ।

पंजीकरण प्रपत्र

1. नाम : .....
2. पदनाम : .....
3. संस्थान : .....
4. कार्यशाला सत्र : पहला (.....) दूसरा (.....) कृपया सही का निशान लगाएं
5. लेख का विषय : .....
6. पत्रव्यवहारी लेखक : .....
7. पता : .....
8. संपर्क विवरण : दूरभाष .....; ई–मेल.....
   फैक्स.....

हस्ताक्षर :

सम्पर्कः

डा. श्रीकांत सामंत
प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी, हिंदीकक्ष,
भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,
बैरकपुर कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत
दूरभाषः 033–25921190/91; मो.: 9830849393;
ई–मेलः samantacifri@yahoo.co.in

जीविकोपार्जन में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी की भूमिका

(दिनांकः 16 मार्च, 2019)

आयोजक

डा. बि. के. दास

निदेशक

आयोजन स्थल

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,
बैरकपुर, कोलकाता – 700120, पश्चिम बंगाल, भारत

संस्थान का संशिप्त विवरण

भारत में नदियों, ज्वारनदमुख, जलाशयों, आद्र्क्षेत्रो, झीलों, तटीय लैगून और बैकवाटर्स के रूप में विशाल और विविध प्रकार के अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधन हैं, जो देश में मछली उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसके साथ ही भोजन, पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन और लाखों लोगों की आजीविका को भी सुनिश्चित करते हैं। अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी की भूमिका को देखते हुए, भारत सरकार ने तत्कालीन खाद्य और कृषि मंत्रालय के तहत 17 मार्च 1947 को कलकत्ता में एक केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान केंद्र की स्थापना की। बाद में सन 1959 में केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान केंद्र को एक पूर्ण विकसित अनुसंधान संस्थान के रूप में पहचान दी गयी, जिसे "केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान" के रूप में नाम दिया गया। 1967 में यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि मंत्रालय (वर्तमान में कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली) के अधीन कार्यरत हुआ । संस्थान स्थायी मत्स्य पालन के लिए अन्तर्स्थलीय खुले जल की जानकारियाँ, जलीय जैव विविधता के संरक्षण, पारिस्थितिक सेवाओं की अखंडता और इन जल संसाधनों से कृषको के सामाजिक उत्थान के लिए प्रयासरत रहा है। संस्थान का मुख्यालय ऐतिहासिक स्थान बैरकपुर, पश्चिम बंगाल में स्थित है जिसके प्रमुख क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र – इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), गुवाहाटी (असम), बैंगलोर (कर्नाटक) और वडोदरा (गुजरात) में, तथा अनुसंधान केंद्र – कोच्चि (केरल) और कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में स्थित हैं। यह संस्थान आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित है और विश्व स्तरीय सेवा मानक प्रदान करता है। विगत वर्षो के दौरान इस संस्थान के कार्यकलापों में अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों का विशेष स्थान रहा है जिसमें कई वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियां का योगदान रहा हैं। मत्स्य पालन और प्रबंधन प्रणालियों से जुड़े सभी कृषको और हितधारकों के लिए संस्थान समय–समय पर अपने उत्कृष्ट शोध कार्यो द्वारा नयी तकनीकों का प्रचार प्रसार करता रहता है ।

यह संस्थान अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास के लिए अनेक ऐतिहासिक गतिविधियों का गवाह रहा है। संस्थान ने वैज्ञानिको, कृषको, हितधारको और विद्यार्थियों के सामंजस्य से दूसरी नील क्रांति का आगाज़ आरम्भ कर दिया है ।

कार्यशाला का उद्देश्य

भारत एक विशाल अंतर्स्थलीय खुले मीठे जल संसाधनों से समृद्ध देश है जिसमें 45000 कि.मी. लम्बी नदिया, 3 लाख हेक्टेयर ज्वारनदमुख, 1.9 लाख हेक्टेयर बैकवाटर (अप्रवाही जल) और लैगून, 35.1 लाख हेक्टेयर जलाशये, 3.54 लाख हेक्टेयर बाढ़कीयकृत आद्रक्षेत्र और 7.2 लाख हेक्टेयर अपलैंड (उच्च स्थल) शामिल है। भारतीय घरेलू बाजार में 2025 तक मछली की अनुमानित मांग 160 लाख टन होगी जबकि वर्तमान उत्पादन 1.141 करोड़ टन जिसमें अंतर्स्थलीय (65 %) और समुद्री (35%) क्षेत्रों से हैं। लगभग एक दशक से समुद्री क्षेत्रों से मत्स्य उत्पादन में योगदान सीमित पाया गया है लेकिन अंतर्स्थलीय क्षेत्रों से मत्स्य उत्पादन को बढाने के लिए संभावनाएं अभी बहुत हैं। इन संसाधनों से भूमिहीन सहित 12.4 लाख अंतर्स्थलीय मछुआरों को रोजगार और आजीविका सहायता प्रदान होती हैं। इस परिदृश्य में, अंतर्स्थलीय खुले मीठे जल संसाधन, मत्स्य उत्पादन और उसकी मांग के अंतर को कम करने के लिए, भोजन में उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन की आवश्यकता के लिए, ग्रामीणजन को आजीविका देने के लिए और कृषको की आय को दोगुना करने के लिए, एक आशाजनक विकल्प है। इसी प्रयास को पूरा करने हेतु हिंदी में एक दिवसीय वैज्ञानिक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में अनुसंधानकर्ता अपने शोध कार्यों / विचारों को हिंदी में प्रस्तुत कर सकेंगें और जिसके द्वारा मात्स्यिकी विज्ञान व अनुसंधान को बढ़ावा मिलेगा और जीविकोपार्जन के मौजूदा और अन्य विकल्पों पर विस्तार से विचार विमर्श हो पायेगा। इस कार्यशाला को हिन्दी में आयोजित किया जायेगा ताकि ज्यादा से ज्यादा जन तक वैज्ञानिक तकनीको को पहुँचाया जा सके.

कार्यशाला के सत्र

1. पहला सत्र – विषय : मात्स्यिकी वर्धन में जलीय पारिस्थितिकी का योगदान
2. दूसरा सत्र – विषय : सामाजिक उत्थान में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की महत्ता

लेखों का आमंत्रण

इस कार्यशाला में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी अपना पूर्ण लेख हिंदी में ई–मेल द्वारा भेज सकते है । लेख पुर्णतः मूल रूप में होना चाहिए और किसी भी अन्य जगह प्रकाशित या प्रदर्शित नहीं होना चाहिए । लेख के विषय, अंतर्वस्तु या लेखकों के बीच हितो के टकराव के लिए अनुरूपी लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी होगा । लेखको से निवेदन है की लेख का प्रारूप एम. एस. वर्ड में टाइप होना चाहिए, थीम फॉन्ट कृतिदेव / यूनिकोड होना चाहिए; फॉन्ट साइज़ 14; हर लाइन के बीच में 1.5 का स्पेस; अधिकतम पृष्ठ संख्या 10–15 (A4 साइज़) होनी चाहिए; रेफरेन्सेस के लिए हमारे जर्नल ऑफ़ इनलैंड फिशरीज सोसाइटी ऑफ़ इंडिया (वेबसाइटः http://www.ifsi.org.in/) के संरूप को अपनाये; प्रत्येक चित्र और तालिकाओं काले और सफ़ेद रंग में, उनका शीर्षक हिंदी में और अधिकतम संख्या दोनों की 4–6 तक होनी चाहिए । रंगीन चित्रों या तालिकाओं को काले और सफ़ेद रंग में हे प्रकाशित किया जायेगा । चित्रों और तालिकयों का किसी भी प्रकार से संक्षिप्त / विस्तार रूप से विवरण लेख में होना आवश्यक है । लेख का प्रारूप : शीर्षक (टाइटल) – लघु और सूचनात्मक होना चाहिए; सार (एबस्ट्रैक्ट) – संक्षिप्त रखे; मुख्य शब्द (कीवर्ड) की संख्या 5–6 तक; प्रस्तावना (इंट्रोडक्शन) शिक्षाप्रद होना चाहिए, सामग्री और विधियाँ (यदि कोई हों) विस्तृत होनी चाहिए; परिणाम; चर्चा भी विस्तृत होनी चाहिए; और संदर्भ (रेफरेन्सेस)– अधिकतम 10–15 संख्या तक.